राम और भारतीय राष्ट्रवाद का सांस्कृतिक मानस

असरा अख्तर
पीएच.डी शोधार्थी दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध सार

प्रस्तुत शोध आलेख "राम और भारतीय राष्ट्रवाद का सांस्कृतिक मानस" भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा में राम के बहुआयामी स्वरूप का विश्लेषण करता है । आलेख में यह प्रतिपादित किया गया है कि राम केवल धार्मिक आस्था के प्रतीक नहीं हैं, बल्कि भारतीय समाज के नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक एकात्मता, दायित्व-बोध, न्याय-चेतना तथा राष्ट्रीय अस्मिता के स्थायी आधार भी हैं । वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, रामचरितमानस तथा विभिन्न क्षेत्रीय रामायणों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि राम भारतीय सांस्कृतिक स्मृति के ऐसे केंद्रीय प्रतीक हैं, जिन्होंने विविध भाषाओं, लोकपरंपराओं और आध्यात्मिक धाराओं को एक सूत्र में पिरोया है ।

आलेख में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को भारतीय संदर्भ में आध्यात्मिक एकता, साझा सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक निरंतरता पर आधारित राष्ट्र-चेतना के रूप में व्याख्यायित किया गया है । रामराज्य की अवधारणा को आदर्श शासन, सामाजिक न्याय, लोककल्याण और नैतिक प्रशासन के प्रतिमान के रूप में प्रस्तुत करते हुए गाँधी, विवेकानंद और श्री अरविंद जैसे आधुनिक विचारकों के दृष्टिकोण का भी विवेचन किया गया है । समकालीन भारत में राम के सांस्कृतिक, राजनीतिक और वैश्विक प्रभावों का अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष निकाला गया है कि राम भारतीयता के मूल्यबोध, सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रीय एकता के अनिवार्य आधार हैं । इस प्रकार राम का विमर्श प्राचीन ग्रंथों से लेकर आधुनिक वैश्विक परिप्रेक्ष्य तक भारतीय राष्ट्रवाद के सांस्कृतिक मानस को दिशा प्रदान करता है ।

बीज शब्द

राम, भारतीय राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक मानस, रामराज्य, वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस, भारतीयता, राष्ट्रीय अस्मिता, लोकधर्म, राजधर्म, सांस्कृतिक एकात्मता, समावेशी राष्ट्र-चेतना

मूल आलेख

भारतीय सभ्यता की सांस्कृतिक आत्मा अनेक आयामों में व्याप्त है, किन्तु इसके मूल सांस्कृतिक-मानस को यदि किसी एक प्रतीक में देखा जाए, तो वह निस्संदेह 'राम' है । राम केवल धार्मिक श्रद्धा या पौराणिक आख्यान के पात्र नहीं हैं; वे भारतीय मूल्यबोध, सामाजिक अनुशासन, दायित्व-निष्ठा, न्याय-चेतना, और राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक के रूप में हजारों वर्षों से भारतीय मानस को प्रभावित करते आए हैं । राम की यह प्रतिष्ठा किसी एक युग, एक भाषा या एक भूगोल तक सीमित नहीं है; वे भारतीय उपमहाद्वीप के विविध सांस्कृतिक रूपों, साहित्यिक परंपराओं, आध्यात्मिक साधना, कलात्मक अभिव्यक्तियों और राजनीतिक विचारधारा में समान रूप से प्रतिष्ठित हैं ।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, जैसा कि भारतीय परिप्रेक्ष्य में विकसित हुआ है, वह किसी संकीर्ण राष्ट्र-चेतना का प्रतिफल नहीं, बल्कि सांस्कृतिक स्मृतियों, मिथकीय चरित्रों, पुराण-परंपरा, दार्शनिक चिंतन और सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से निर्मित व्यापक और समावेशी राष्ट्र-चेतना है । इस राष्ट्र-चेतना का एक महत्त्वपूर्ण बिंदु 'राम' हैं, जो एक ओर मर्यादा, नीति, धर्म और करुणा के आदर्श हैं, और दूसरी ओर सामूहिक सांस्कृतिक स्मृति का केंद्रीय प्रतीक है ।

राजनीतिक विज्ञान और सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अर्थ केवल राजनीतिक सीमाओं से निर्धारित राष्ट्र नहीं, बल्कि उस सांस्कृतिक विरासत से है जो किसी समाज को दीर्घकालिक ऐतिहासिक निरंतरता प्रदान करती है । यूरोपीय राष्ट्रवाद प्रायः जातीयता, भाषा और राज्यसत्ता पर आधारित रहा, जबकि भारतीय संदर्भ में राष्ट्र का निर्माण सांस्कृतिक एकता, आध्यात्मिक दृष्टि और साझा स्मृति-परंपरा पर स्थापित है ।

भारतीय राष्ट्रवाद का यह सांस्कृतिक रूप उपनिषदों, पुराणों, महाकाव्यों, स्मृतियों, आचार-प्रक्रियाओं, पर्वों, लोककथाओं, भाषाई विविधता और साहित्यिक परंपराओं से अनुप्राणित होता है । यहाँ राष्ट्र केवल भौगोलिक अवधारणा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एकात्मता का अनुभव है । इसी सांस्कृतिक एकात्मता का केंद्र ऐसे प्रतीक हैं जो भारत की आत्मा को ओत-प्रोत करते हैं जैसे राम, कृष्ण, शिव, देवी, नदियाँ, पर्वत, तीर्थ आदि ।

इस क्रम में राम एक विशिष्ट प्रतीक हैं, क्योंकि वे राष्ट्रीय चरित्र, सामाजिक मर्यादा और नैतिक आदर्श को एक साथ समाहित करते हैं । भारतीय सभ्यता की स्मृति-परंपरा में महाकाव्य और पुराण अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं । इनमें कथा वस्तु मात्र मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक ढाँचे का आदर्शमूलक स्वरूप थी । रामायण

केवल कहानी नहीं, बल्कि भारतीय समाज के नैतिक व दार्शनिक ढाँचे का निर्माण करने वाला मूलपाठ है ।

इसीलिए भारतीय राष्ट्रवाद का स्वभाव ग्रंथ-आधारित और 'संस्कार-आधारित' है । राम की मर्यादा, त्याग, संघर्ष, अयोध्या की परिकल्पना, वनवास का प्रतिमान, सीता का आदर्श, लक्ष्मण की निष्ठा और हनुमान की समर्पण-भावना, ये सब भारतीय मानस की आत्मस्मृति में निहित हैं, जो राष्ट्र-निर्माण की मूल्य-व्यवस्था को दिशा प्रदान करते हैं ।

वाल्मीकि रामायण भारतीय संस्कृति का मूल महाकाव्य है, जिसमें राम धर्म, करुणा, साहस और मर्यादा से सम्पन्न आदर्श पुरुष के रूप में चित्रित हैं । यह कथा मात्र राजनीतिक संघर्ष का वृत्तांत नहीं, बल्कि आदर्श शासन 'रामराज्य' की परिकल्पना का स्रोत है । वाल्मीकि रामायण में राम का चरित्र राष्ट्र-निर्माण के तीन प्रमुख तत्व प्रदान करता है - राजधर्म:, सत्ता का उपयोग व्यक्ति या स्वार्थ की पूर्ति हेतु नहीं, बल्कि प्रजा के हित और न्याय की स्थापना हेतु है । लोकधर्म: राजा का कर्तव्य अपने लोक की आकांक्षाओं और हितों से जुड़ा होता है । नैतिक आदर्श: समाज केवल क़ानून से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक नैतिकता से संचालित होता है । राम का वनवास प्रजा की इच्छानुरूप वचन-पालन का उदाहरण है । इससे राष्ट्र की नैतिक नींव न्याय और सत्य पर स्थापित होने का संदेश मिलता है । वनवास की कथा में ऋषियों, वनों, जनजातियों और विविध समुदायों से मिलने के प्रसंग भारतीय बहुलता को स्वीकार करने वाले समन्वयकारी राष्ट्रवाद के मूल बिंदु हैं ।

उत्तरकाण्ड में राम शासन की जो छवि प्रस्तुत की गई है, वह न्याय-प्रणाली, राजा के आत्मानुशासन, जनता की समस्याओं पर त्वरित ध्यान, और अशांति तथा अनाचार से मुक्त समाज का आदर्श मॉडल प्रस्तुत करती है । रामराज्य का वर्णन एक ऐसे राष्ट्र का संकेत है जिसमें आर्थिक समृद्धि, सुरक्षा, सामाजिक न्याय,सांस्कृतिक समरसता और नैतिक अनुशासन समान रूप से उपस्थित होंती है । भारतीय राष्ट्रवाद में 'रामराज्य' सामाजिक-आर्थिक न्याय पर आधारित आदर्श शासन का पर्याय बन गया है । गांधी से लेकर आधुनिक राजनीतिक विमर्श तक यह शब्द सामाजिक नैतिकता और न्याय की आकांक्षा को व्यक्त करता है । अध्यात्म रामायण, राम को ब्रह्म का अवतार मानते हुए ईशत्व और भक्ति का समन्वय करती है । इससे सांस्कृतिक मानस में राम केवल राजा नहीं, बल्कि धर्म और मोक्ष के मार्गदर्शक के रूप में प्रतिष्ठित होते हैं ।

यह रूप भारतीय राष्ट्रवाद की आध्यात्मिक नींव को मजबूत करता है क्योंकि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद किसी एक धार्मिक पंथ पर आधारित नहीं, बल्कि आध्यात्मिक एकत्व के दर्शन पर आधारित है । पुराणों में राम का विस्तृत वर्णन यह दर्शाता है कि वे केवल काव्य के नायक नहीं, बल्कि धर्म-रक्षा, सामाजिक अनुशासन और मूल्यसंरचना के प्रतीक के रूप में पूरे हिन्दू सांस्कृतिक जगत में व्यापक रूप से स्वीकार किए गए । राम के पुराणिक स्वरूप में धर्म-अधर्म संघर्ष और सामाजिक संतुलन की अवधारणा भारतीय राष्ट्रवाद के ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विमर्श का आधार बनती है । भारत के प्रत्येक क्षेत्र में राम की कथा भिन्न रूपों में विकसित हुई कहीं वे अहिंसा के प्रतीक, कहीं सांस्कृतिक नायक, कहीं जनसमुदाय के संरक्षक हैं । यह विविधता भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के समावेशी स्वभाव का परिचायक है ।

रामचरितमानस का भारतीय समाज पर प्रभाव किसी धार्मिक ग्रंथ से कहीं अधिक व्यापक है । तुलसीदास ने राम को लोकभाषा, लोकजीवन और लोकसंस्कृति से जोड़कर जनमानस में उतारा ।

तुलसी के राम दयालु, लोकसहज, धर्म-संरक्षक और आचार-प्रधान हैं । तुलसीदास के समय भारतीय समाज राजनीतिक संकटों से जूझ रहा था, ऐसे में रामचरितमानस सांस्कृतिक एकता और नैतिक जागरण का ग्रंथ बनकर सामने आया । तुलसीदास ने राम को 'राष्ट्र-धर्म' और 'लोक-धर्म' के समन्वयक के रूप में स्थापित किया । इस दृष्टि से मानस भारतीय राष्ट्रवाद की सांस्कृतिक और भाषाई एकता का आधार बना । तमिल कंब रामायण में राम वीरता और नीति-संयम के प्रतीक हैं । बंगाली कृतिवास रामायण में राम लोकभक्ति और सांस्कृतिक एकत्व के आदर्श हैं । आनंद रामायण और अध्यात्म रामायण में वे आध्यात्मिकता के केंद्र हैं । इन सभी विविधताओं ने राम को 'भारतीय' बना दिया । रामलीला, लोकगीते, आल्हा, भक्ति गीत, कथावाचन, ये सभी भारतीय सांस्कृतिक समाज में राम की जीवंत उपस्थितियों को दर्शाते हैं । कुमाऊँ, हिमालय, महाराष्ट्र, तेलंगाना, असम, मणिपुर, कर्नाटक, तमिलनाडु सभी के लोकनाट्य में राम का प्रभाव अलग-अलग शैली में प्रतिबिम्बित होता है ।

यह जीवंतता राष्ट्र के सांस्कृतिक पुनरुत्पादन और सामाजिक एकात्मता को स्थायी बनाती है । राम भक्ति आंदोलन ने वर्ग, जाति और क्षेत्रीय विभाजन से ऊपर उठकर समाज को एक नैतिक और आध्यात्मिक केंद्रीयता प्रदान की । कबीर, रामानंद, तुलसी आदि के यहाँ राम प्रेम और एकता के प्रतीक हैं । यह भक्ति-आधारित सांस्कृतिक संगठितता भारतीय राष्ट्रवाद के सामाजिक आयाम को मजबूत करती है और रामराज्य का

राजनीतिक रूपांतरण महात्मा गांधी ने 'रामराज्य' को न्याय, सत्य, समानता और मानवीय नैतिकता पर आधारित शासन की संज्ञा दी । गांधी के यहाँ राम का अर्थ ईश्वर और नैतिकता दोनों है । गांधी के राष्ट्रवाद में राम एक आध्यात्मिक प्रतीक के रूप में उपस्थित रहे हिंसा रहितता, सत्य , न्याय,समाज-सम्मिलन के रूप में उपस्थित रहे है । विवेकानंद ने राम को वीरता, संयम और सामाजिक कल्याण के आदर्श के रूप में देखा । उनका यह दृष्टिकोण भारतीय राष्ट्रवाद में शक्ति और नैतिकता के समन्वय का उदाहरण है । श्री अरविंद के विचार में राम धर्मयुद्ध, नीति और आदर्श राज्य की रक्षा का प्रतीक हैं । अरविंद ने राम को भारतीय आत्मा की दिव्य-शक्ति कहा जिससे राष्ट्र का चरित्र और संस्कृति विकसित होती है । आधुनिक काल में राम का उल्लेख प्रायः राजनीतिक विमर्श में आता है । राम न केवल सांस्कृतिक प्रतीक हैं बल्कि भारतीय पहचान, गौरव और ऐतिहासिक स्मृति के केंद्र भी हैं ।

राम मंदिर आंदोलन और उसके निर्माण ने भारतीय राजनीतिक चेतना को सांस्कृतिक मूल्यों, ऐतिहासिक विरासत और धार्मिक भावनाओं से जोड़ते हुए नई दिशा प्रदान की है । इसने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को पुनर्स्थापित किया । समकालीन भारत में राम साहित्य, कला, संगीत, धारावाहिक, सिनेमा, शैक्षणिक विमर्श, और डिजिटल संस्कृति सबमें उपस्थित हैं । राम का यह सांस्कृतिक महत्व राजनीतिक सीमाओं से भी आगे बढ़कर 'भारतीयता' का प्रतिनिधित्व करता है । भारतीय संविधान में सीधे-सीधे राम का उल्लेख नहीं, किन्तु न्याय, समरसता, लोककल्याण और दायित्व जैसे मूल्य रामराज्य की अवधारणा से गहरे जुड़े हैं ।

भारतीय न्यायालयों में अनेक अवसरों पर 'रामायण' और 'राम' के आदर्शों को सांस्कृतिक संदर्भ में उद्धृत किया गया है । यह संविधान की धर्मनिरपेक्षता को प्रभावित किए बिना सांस्कृतिक मूल्य-परंपरा को मान्यता देने का उदाहरण है । राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं अर्थात् अनुशासन, संयम और आदर्श का मूर्तरूप है । भारतीय समाज मर्यादा को सामाजिक-नैतिक जीवन का मूल मानता है । यही मूल्य राष्ट्रवाद को संतुलित और नैतिक बनाए रखते हैं । राम की कथा में पारिवारिक और सामाजिक सम्मान की जो परंपरा मिलती है, वह भारतीय राष्ट्रवाद की सांस्कृतिक संरचना का मूल अंग है । राम वनवास त्याग और दायित्व की पराकाष्ठा है । यह भावना राष्ट्र-निर्माण में अनिवार्य है, क्योंकि राष्ट्रवाद कर्तव्यबोध पर आधारित होता है । राम विभिन्न समुदायों वनवासियों, ऋषियों, वानरों, निशादों–सभी को अपने राष्ट्र का अंग मानते हैं । यही बहुलता भारत के समावेशी राष्ट्रवाद की आत्मा है ।

वैश्विक संदर्भ में राम और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद देखे तो थाईलैंड, इंडोनेशिया, कंबोडिया, लाओस, म्यानमार आदि देशों में राम राष्ट्रीय-सांस्कृतिक प्रतीक हैं । अयुत्या (थाईलैंड), अंगकोर (कंबोडिया), बाली (इंडोनेशिया) आदि की वास्तुकला और नृत्य-नाट्य में राम संस्कृति का प्रमुख प्रभाव है । यह दर्शाता है कि राम का सांस्कृतिक प्रभाव सीमाओं से परे जाकर एशियाई सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की साझा धरोहर बन चुका है । प्रवासी भारतीय अपने धार्मिक सांस्कृतिक संस्कारों को बनाए रखने हेतु रामायण-आधारित नाट्य, कथाएं और उत्सवों का आयोजन करते हैं । यह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की वैश्विक पुनरावृत्ति है । राम को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से देखने के दो भिन्न प्रवाह हैं, - इतिहासवादी दृष्टि, सांस्कृतिक-आध्यात्मिक दृष्टि कई इतिहासकार रामायण को मिथक और सांस्कृतिक आख्यान मानते हैं, जबकि भारतीय दृष्टिकोण में मिथक स्वयं ऐतिहासिक संस्कृति के प्रतीक होते हैं । राम भारतीय सांस्कृतिक मानस के सबसे प्राचीन और स्थायी प्रतीक हैं । उनकी कथा महज धार्मिक आख्यान नहीं, बल्कि भारतीय राष्ट्रीय-चेतना की आधारशिला है । प्राचीन ग्रंथों से लेकर आधुनिक विचारकों तक, राम नीति,मर्यादा, राजधर्म, लोकधर्म, कर्तव्य, समन्वय

के आदर्श के रूप में स्थापित हैं ।

भारतीय राष्ट्रवाद का सांस्कृतिक स्वरूप किसी राजनीतिक विचारधारा की परिधि में सीमित नहीं, बल्कि हजारों वर्षों की सांस्कृतिक समरसता, आध्यात्मिक एकता और स्मृति-परंपरा का परिणाम है । राम इस स्मृति-परंपरा का केंद्र हैं ।समकालीन भारत में राम का विमर्श चाहे सांस्कृतिक हो, राजनीतिक हो, शैक्षणिक हो या वैश्विक भारत की पहचान, मूल्यबोध और राष्ट्रीय गौरव का मूल स्रोत बना हुआ है । स्पष्ट है कि राम भारतीय राष्ट्रवाद के सांस्कृतिक मानस का अनिवर्चनीय और विशिष्ट आधार हैं, जिनकी उपस्थिति प्राचीन ग्रंथों से लेकर आज तक भारतीय जीवन और विचार को दिशा प्रदान करती है ।

सहायक ग्रंथ सूची

1. *वाल्मीकि रामायण विभिन्न हिंदी प्रकाशित संस्करण ।*
2. *तुलसीदास रामचरितमानस. तुलसी पीठ संस्करण ।*
3. *3. भारत में धर्म और राष्ट्रवाद : राम हिंदू राष्ट्र के देवता । जर्नल ऑफ़ एशियन स्टडीज़ ।* *https://www.researchgate.net/publication/233089256_Religion_and_nationalism_in_India_Ram_the_God_of_the_Hindu_nation*
4. *4. सांस्कृतिक-राजनीतिक संदर्भ शोध सामाजिक जर्नल । (2022). राम मंदिर आंदोलन: एक सामाजिक-राजनीतिक अध्ययन । शोध सामाजिक, 4(1), 45–61.* *https://shodhsamajik.com/shodhsamajik/article/view/45/44*

5. *विचारक और विचारधाराएं, एस. आर. गोयल (1993). हिंदू समाज घेराबंदी में, नई दिल्ली : वॉयस ऑफ इंडिया।*
6. *नवभारत टाइम्स. (2024, 13 जनवरी). भगवान राम और रामायण पर स्वामी विवेकानंद। https://navbharattimes.indiatimes.com/india/swami-vivekananda-on-lord-rama-historic-speech-ramayana-ram-mandir/articleshow/106777881.cms*
7. *वैश्विक प्रभाव और पूरक सामग्री ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (2019). एक नए युग के लिए एक नई रामायण, आधुनिक भारत में सांस्कृतिक परिवर्तन में। https://academic.oup.com/book/60895/chapter/530747340*

***